• जीवन में...

शुभ संकेत

कहते हैं कि जब आप किसी चीज को पूरी मन से चाहो तो पूरी कायनात उसे आपसे मिलाने की कोशिश करती है. माना जाता है कि अक्सर जब हमारी जिंदगी में कोई बड़ा बदलाव या बड़ी सफलता आने वाली होती है, तो हमारे आसपास का वातावरण बदलने लगता है। ब्रह्मांड हमें कुछ ऐसे खास और शुभ संकेत देने लगता है, जो यह बताते हैं कि हमारी मेहनत अब रंग लाने वाली है। लेकिन भागदौड़ भरी जिंदगी में हम अक्सर इन इशारों को नजरअंदाज कर देते हैं। आइए जानते हैं उन कुछ शुभ संकेतों के बारे में, जो बताते हैं कि आपके जीवन में सफलता का सवेरा होने वाला है।

- स्वप्न शास्त्र में कुछ सपनों को विशेष रूप से शुभ माना गया है। यदि किसी व्यक्ति को बार-बार साफ जल, मंदिर, दीपक, सूर्य उदय, सफेद फूल या देवी-देवताओं के दर्शन होते हैं, तो इसे आने वाले अच्छे समय का संकेत माना जाता है। मान्यता है कि ऐसे सपने व्यक्ति के जीवन में नई शुरुआत और सफलता के दरवाजे खुलने का संकेत देते हैं।
- कभी-कभी व्यक्ति के जीवन में कोई विशेष उपलब्धि नहीं होती, फिर भी उसके भीतर सकारात्मकता और उत्साह बना रहता है. आध्यात्मिक मान्यताओं के अनुसार यह संकेत हो सकता है कि आपके जीवन में कोई अच्छा परिवर्तन आने वाला है। मन का खुश रहना और आत्मविश्वास बढ़ना सफलता की ओर बढ़ते कदमों का प्रतीक माना जाता है।
- जब लंबे समय से बंद रास्ते खुलने लगें, नई संभावनाएं सामने आने लगें या करियर और व्यवसाय में अचानक अवसर मिलने लगें, तो इसे भी शुभ संकेत माना जाता है। कहा जाता है कि यह समय व्यक्ति के भाग्य के जागने और मेहनत के फल मिलने का संकेत हो सकता है।
- जीवन में सही समय पर सही लोगों का मिलना भी सफलता का संकेत माना जाता है। यदि आपको ऐसे लोग मिलने लगें जो प्रेरित करते हों, मार्गदर्शन देते हों या आपके लक्ष्य तक पहुंचने में मददगार साबित हों, तो यह भविष्य की प्रगति का संकेत हो सकता है।
- जब व्यक्ति अपने लक्ष्य को लेकर पहले से अधिक साफ और खुद पर भरोसा महसूस करने लगे, तो इसे भी शुभ संकेत माना जाता है। आत्मविश्वास सफलता की सबसे बड़ी सीढ़ियों में से एक है और यह अक्सर तब बढ़ता है जब व्यक्ति सही दिशा में आगे बढ़ रहा होता है।

• पूजा-पाठ...

माला से जाप

कई बार आप देखते हैं कि लोग अलग-अलग मोतियों की माला से जाप करते हैं, लेकिन इस ओर बिल्कुल ध्यान नहीं जाता है कि इसका क्या अर्थ हो सकता है. दरअसल, जप न सिर्फ मंत्रों का उच्चारण होता है बल्कि यह भगवान के साथ

भावनात्मक रूप से जुड़े रहने का जरिया भी होता है। भगवान कृष्ण भगवद् गीता में कहते हैं, पत्रं पुष्पं फलं तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति, तदहं भक्त्युपहृतमश्नामि प्रयतात्मनः जिसका अर्थ है कि वे भक्तिपूर्वक अर्पित किए गए पत्ते, फूल, फल या जल को भी सहर्ष स्वीकार करते हैं। इसी प्रकार, जप भी प्रेम और भक्ति का प्रतीक माना गया है।

त्रेता और द्वापर युगों में भगवान को प्रसन्न करने के लिए निरंतर भक्ति, तपस्या और यज्ञ किए जाते थे, लेकिन कलियुग में सबसे ज्यादा जप को महत्व दिया गया है। कहा जाता है कि भगवान के नाम का जप एकाग्र होकर एक घंटे भी कर लिया जाए तो दिव्य अनुभूति का अहसास होता है. जप करते समय कुछ लोग माला का प्रयोग करते हैं, जबकि अन्य मौन या बिना स्वर के जप करते हैं. हालांकि कलियुग में जप करने के लिए 4 तरह की मालाओं का इस्तेमाल किया जाता है।

रुद्राक्ष की माला-मान्यता है कि रुद्राक्ष की माला से किया गया जाप भगवान शिव की प्रत्यक्ष कृपा दिलाता है. रुद्राक्ष की माला धारण करने से अकाल मृत्यु से बचाव होता है। साथ ही भोलेनाथ सभी मनोकामनाएं पूरी करते हैं। वहींस लेकिन यह केवल माला धारण करने या जपने तक ही सीमित नहीं है, ये इंसानों के कर्म शुद्ध होने पर भी निर्भर करता है।

क्रिस्टल माला-क्रिस्टल माला विशेष शक्तियां प्रदान करती है। इसे धारण करने से दूसरे व्यक्ति के मन को समझने की शक्ति मिलती है और तकनीकी रूप से, व्यक्ति में बहुत ही विशेष शक्तियां प्रकट होती हैं।

तुलसी माला-भगवान विष्णु को तुलसी की माला सबसे ज्यादा प्रिय है। यह माला सभी वर्गों के लोग धारण कर सकते हैं। इस्कॉन जैसे संस्थानों में हर उम्र के लोग इसे धारण करते हुए देखे जा सकते हैं। साथ ही साथ इसी माला से जाप करते हैं। तुलसी की माला विष्णु की कृपा लाती है और जीवन जीने के लिए जरूरी शक्ति प्रदान करती है। पद्म पुराण के अनुसार, ऐसा माना जाता है कि कम से कम 108 दिनों तक तुलसी माला को गले में धारण करने से अश्वमेध यज्ञ के फल प्राप्त होते हैं।

कमलमणि माला -कमलमणि माला (कमल के बीज की माला) महालक्ष्मी को सबसे प्रिय है। इससे जाप करने से शत्रु का नाश होता है, दृष्टि दोष दूर होते हैं। साथ ही साथ निगेटिव एनर्जी भी दूर भागती है। कमलमणि की माला धारण करने से महालक्ष्मी की कृपा मिलती है।

भगवान राम के ये पवित्र मंदिर

भगवान राम को समर्पित विभिन्न मंदिर हैं। भारत भर में भगवान राम के मंदिरों की स्थापत्य शैली सांस्कृतिक प्रभावों की समृद्ध विविधता को दर्शाती है। उत्तर भारत में, कई मंदिर नागर शैली का अनुसरण करते हैं, जिनकी विशेषता ऊंचे, घुमावदार शिखर हैं।

यह शैली अयोध्या में राम जन्मभूमि मंदिर परिसर में प्रमुखता से दिखाई देती है, जिसका विशाल शिखर एक भव्य स्थलचिह्न के रूप में परिकल्पित है...

अयोध्या भगवान राम का जन्मस्थान है और उन्हें पुरुषोत्तम के नाम से जाना जाता है, जिसका अर्थ है सर्वश्रेष्ठ पुरुष या सर्वोच्च पुरुष (व्यक्तित्व)। पूरे भारत में भगवान राम को समर्पित विभिन्न मंदिर हैं। भारत भर में भगवान राम के मंदिरों की स्थापत्य शैली सांस्कृतिक प्रभावों की समृद्ध विविधता को दर्शाती है। उत्तर भारत में, कई मंदिर नागर शैली का अनुसरण करते हैं, जिनकी विशेषता ऊंचे, घुमावदार शिखर हैं। यह शैली अयोध्या में राम जन्मभूमि मंदिर परिसर में प्रमुखता से दिखाई देती है, जिसका विशाल शिखर एक भव्य स्थलचिह्न के रूप में परिकल्पित है। दक्षिण भारतीय राम मंदिर अक्सर द्रविड़ शैली का अनुसरण करते हैं, जिनमें पिरामिडनुमा प्रवेश द्वार (गोपुरम) और कुशलता से तराशे गए स्तंभ होते हैं। तमिलनाडु का कोदंडराम मंदिर इस द्रविड़ भव्यता का उत्कृष्ट उदाहरण है। भगवान राम की जन्मस्थली अयोध्या भारत का एक प्राचीन शहर है। यह सरयू नदी के तट पर स्थित है और हिंदुओं के सात सबसे महत्वपूर्ण तीर्थ स्थलों सप्तपुरी में से एक है। 22 जनवरी, 2024 को मंदिर के गर्भगृह में बाल्यकाल रूप में भगवान श्रीराम की प्राण प्रतिष्ठा हो गई है।

- **राम राजा मंदिर, मध्य प्रदेश**-यह मंदिर मध्य प्रदेश के ओरछा में स्थित है। यह बेतवा नदी के तट पर स्थित है। मंदिर के पीछे की कहानी यह है कि ओरछा की रानी भगवान राम की परम भक्त थीं। एक बार वह अपने पूज्य देवता को बालक के रूप में वापस लाने की इच्छा से अयोध्या गईं। भगवान राम उनके साथ ओरछा आने के लिए सहमत हुए, लेकिन एक शर्त के साथ कि वह एक मंदिर से दूसरे मंदिर नहीं जाएंगे, बल्कि वहीं रहेंगे जहां वह शुरू में उन्हें रखेगी। भगवान राम के लिए एक मंदिर का निर्माण किया गया। जब मंदिर तैयार हो गया, तो उन्होंने रानी के साथ तय की गई शर्त के कारण वहां जाने से इंकार कर दिया। इसलिए, रानी का महल अंततः राम राजा मंदिर बन गया। आपको बता दें कि यहां भगवान राम को सिर्फ भगवान के तौर पर नहीं, बल्कि राजा के तौर पर भी पूजा जाता है। उन्हें तोपों की सलामी भी मिलती है! रामनवमी के शुभ अवसर पर हजारों भक्त दर्शन के लिए कतार में लगते हैं।
- **सीता रामचन्द्रस्वामी मंदिर, तेलंगाना**-यह भारत के प्रसिद्ध राम मंदिरों में से एक है। यह तेलंगाना के भद्राचलम, भद्राद्रि कोठागुडेम जिले में स्थित है। रामनवमी के दिन यहां भव्य उत्सव का स्थान होता है, जब भगवान राम और उनकी पत्नी सीता की शादी की सालगिरह बहुत धूमधाम से मनाई जाती है। इस मंदिर को भद्राचलम मंदिर के नाम से भी जाना जाता है। रामायण से निकटता से जुड़े दो स्थल हैं, भद्राचलम और विजयनगर। कहा जाता है कि राम, सीता और लक्ष्मण भद्राचलम से 35 किमी दूर पर्णशाला में रुके थे। ऐसा कहा जाता है कि भगवान राम ने सीता को बचाने के लिए श्रीलंका जाते समय गोदावरी नदी को पार किया था और इस स्थान पर नदी के उत्तरी तट पर भद्राचलम मंदिर है।
- **रामास्वामी मंदिर, तमिलनाडु**-यह मंदिर भगवान विष्णु के अवतार भगवान राम को समर्पित है और तमिलनाडु के कुंभकोणम में स्थित है। इस मंदिर का निर्माण 400 साल पहले राजा रघुनाथ नायकर ने करवाया था। यह मंदिर रामायण के चित्रों को दर्शाता है और इसके स्तंभों में जटिल नक्काशी भरी हुई है। गर्भगृह में भगवान राम और देवी सीता विवाह मुद्रा में एक साथ बैठे हैं। इसके अलावा भगवान राम और देवी सीता के साथ, शत्रुघ्न भगवान के बाईं ओर अपने भाई को पंखा झलते हुए समारा के साथ हैं, भरत शाही छाता पकड़े हुए हैं और दाईं ओर हनुमान हैं और लक्ष्मण हमेशा की तरह अपने धनुष के साथ दिखाई देते हैं।
- **कालाराम मंदिर, नासिक, महाराष्ट्र**-यह महाराष्ट्र में नासिक शहर के पंचवटी क्षेत्र के भीतर स्थित है। माना जाता है कि यह मंदिर उस स्थान पर स्थित है, जहां भगवान राम अपने वनवास के दौरान रहे थे। इसे 1782 में सरदार रंगराव ओढेकर ने एक पुराने लकड़ी के मंदिर के स्थान पर बनवाया था।

लगभग 12 वर्षों तक यह कार्य चला और लगभग 2000 व्यक्तियों को दैनिक रोजगार मिला। पश्चिमी भारत में यह भगवान राम के बेहतरीन आधुनिक मंदिरों में से एक है। मंदिर में भगवान राम, सीता, लक्ष्मण की काले पत्थर की खड़ी प्रतिमाएं हैं, जिनकी ऊंचाई लगभग 2 फीट है।

■ पं. नित्यानंद

• ध्यान दें...

हनुमान चालीसा

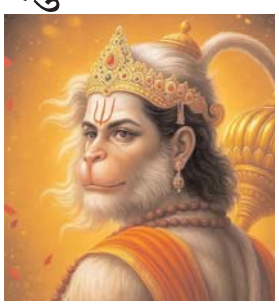

हनुमान चालीसा का पाठ करने से पहले स्नान जरूर करना चाहिए। साफ और स्वच्छ कपड़े धारण करने के बाद ही पूजा शुरू करें। हनुमान जी को लाल रंग बहुत ही प्रिय माना जाता है. इसलिए पूजा के समय लाल फूल, लाल वस्त्र या सिंदूर अर्पित करना शुभ माना जाता है। यदि हो सकता है तो चमेली के तेल के साथ सिंदूर चढ़ाएं। यह उपाय बजरंगबली को प्रसन्न करने वाला माना जाता है। हनुमान चालीसा का पाठ केवल औपचारिकता के रूप में नहीं करना चाहिए। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, हनुमान जी की पूजा में दक्षिण दिशा का विशेष महत्व बताया गया है। यदि संभव हो तो हनुमान जी की प्रतिमा या चित्र के सामने बैठकर दक्षिण दिशा की ओर मुख करके हनुमान चालीसा का पाठ करें। हालांकि घर की व्यवस्था के अनुसार किसी और दिशा में भी श्रद्धा के साथ पाठ किया जा सकता है.पूजा में बूंदी के लड्डू, गुड़-चना, बेसन के लड्डू और केले का भोग विशेष रूप से लगाया जाता है. पूजा के बाद इस प्रसाद को परिवार और जरूरतमंद लोगों में बांटना भी पुण्यदायी माना जाता है।

• पारिजात का पौधा...

घर में या मुख्य द्वार के पास पारिजात का पौधा होने से इसकी सुगंध तनाव को कम करती है और मन को शांति प्रदान करती है। ऐसा माना जाता है कि घर के आसपास पारिजात का पौधा होने से वास्तु दोष कम होते हैं और परिवार में सुख, शांति और आनंद का वातावरण बना रहता है. वास्तु शास्त्र के अनुसार, घर में पारिजात का पौधा लगाने के लिए उत्तर या पूर्व दिशा सबसे उत्तम मानी जाती है।

स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/संपादकः अनल पत्रवाल द्वारा गांव व डाकघर-रजियाणा, तहसील-नगरोटा बगवां, जिला-कांगड़ा-176056, हिमाचल प्रदेश से प्रकाशित एवं एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सेक्टर-6, नोएडा-201301, गौतम बुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश से मुद्रित